बेहतरीन सिनेमा का पैनोरमा

❐ आशा सिंह

छाया : खलीक

मध्यप्रदेश के संस्कृति और जनसंपर्क मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने फिल्म समारोह का उद्घाटन किया

कुछ बेहतरीन फिल्मकार कला और मनोरंजन के अलग-अलग कठघरे से निकलकर एक नए तरह का सिनेमा रच रहे हैं। ऐसी फिल्मों पर न तो 'आर्ट' फिल्मों का लेबल लगाकर उबाऊ करार दिया जा सकता है और न ही धन कमाने की लालसा से बनाया गया 'मास प्रोडक्ट' कहा जा सकता है। यह अलग तरह का सिनेमा है जो सार्थक सिनेमा का नया मुहावरा गढ़ रहा है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के फिल्म निदेशालय के आयोजन 'इंडियन पैनोरमा' में पिछले दिनों भोपाल के सिने रसिक कुछ ऐसी ही फिल्मों से रूबरू हुए।

इस समारोह में दिखाई गई 'लिटिल जीजो', 'कांचीवरम', 'हरिश्चन्द्राची फैक्ट्री' जैसी फिल्में बिना किसी फूहड़ प्रदर्शन के बॉलीवुड की बड़े बजट की फॉर्मूला फिल्मों को मात देती हैं। जब्बार पटेल की 'अंतर्ध्वनि' और राजेन्द्र जांगले की 'रागा ऑफ रिवर नर्मदा' जैसी डॉक्यूमेंट्री फिल्में भी एक क्षण पर्दे से निगाह नहीं हटने देतीं। पंद्रह साल के लम्बे अंतराल के बाद सांस्कृतिक राजधानी में आयोजित हुए इस प्रतिष्ठित फिल्म समारोह ने फिल्मों पर संवाद की परिपाटी भी शुरू की। अधिकांश फिल्मों के निर्देशक प्रदर्शन के बाद दर्शकों के सवालों से दो-चार हुए। तीस सालों से नाट्य और सिने जगत में सक्रिय डॉ. जब्बार पटेल जैसी प्रख्यात हस्ती ने भी रवीन्द्र भवन सभागार में दर्शकों से रूबरू होकर अपनी फिल्म के बारे में बात की। हिन्दी फिल्मों के वरिष्ठ अभिनेता अनुपम खेर और दक्षिण के कद्दावर अभिनेता और कांचीवरम फिल्म के प्रमुख किरदार प्रकाश राज ने भी अपना अनुभव साझा किया।

जिंदगी और संघर्ष का सिनेमा

समारोह की तीन लघु फिल्में ऐसे लोगों के जीवन पर आधारित थीं जिनकी दुनिया औरों की भाँति सामान्य नहीं है। गीतू मोहनदास की 'केलकुन्नडो' एक ऐसी बालिका का जीवन वृत्त है जो देख नहीं सकती, अपने आसपास के जीवन को महसूस करती हुई बड़ी हो रही है। गीतू मलयालम फिल्मों की सुपरिचित अदाकारा और सिनेमेटोग्राफर राजीव रवि की पत्नी हैं जिन्होंने अनुराग कश्यप की देव डी समेत अधिकांश फिल्मों में दृश्य का जादू बिखेरा है। उक्त फिल्म में भी सिनेमेटोग्राफी रवि ने की है। कोलकाता के सौरव सारंगी की डॉक्यूमेंट्री 'बिलाल' में गंदी बस्ती में रहने वाले छोटे से बालक बिलाल की जिंदगी के एक साल का दस्तावेज है। उसके माता-पिता दोनों अंधे हैं। ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर लड़खड़ाते अपने अंधे माता-पिता की उंगलियाँ थामे बिलाल बड़ा हो रहा है। आँख वाले इस बच्चे ने अपने माता-पिता की अंधेरी

दुनिया से संवाद करना सीख लिया है। तीसरी फिल्म उमेश कुलकर्णी की 'थ्री ऑफ अस' रही। उन्होंने अपने फिल्म इंस्टीट्यूट की पढ़ाई के दौरान बतौर प्रोजेक्ट यह फिल्म बनाई थी जिसे राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। चालीस साल के गंभीर रूप से विकलांग युवक और गूँगे-बहरे माँ-बाप की जीवनचर्या को कैमरे में कैद किया गया है। असामान्य लोग भी थोड़ी मुश्किलों जो कि देखने वालों को लगती हैं, के बावजूद सामान्य जीवन जी लेते हैं।

संगीत और प्रकृति का ताना-बाना

डॉ जब्बार पटेल की फिल्म 'अंतर्ध्वनि' संतूर के पर्याय बन चुके पंडित शिवकुमार शर्मा का जीवन वृत्त है। यह एक सांगीतिक कृति है। पूरी फिल्म में संतूर का संगीत है, कहीं कोई रिकार्डेड म्यूजिक का इस्तेमाल नहीं हुआ है। यह डॉलबी साउंड में बनी फिल्म डिवीजन की पहली फिल्म है। वॉयस ओवर का भी सहारा नहीं लिया गया है। पंडित शर्मा अपनी कहानी अपनी जुबानी सुनाते हैं। राजेन्द्र जांगले की 'रागा ऑफ रिवर नर्मदा' में ध्रुपद के रागों पर उठती-गिरती नर्मदा की लहरों का संगम है। समारोह में रवि विलियम्स और रोशनी भाटी की डॉक्यूमेंट्री 'लमसेना' भी दिखाई गई जो बैगाओं की विवाह प्रथा का दस्तावेजीकरण है।

लिटिल जीजो, हरिश्चन्द्राची फैक्ट्री, कांचीवरम

फीचर फिल्मों में सूनी तारपोरवाला की 'लिटिल जीजो', एजाज खान की 'द व्हाइट एलीफेंट', परेश मोकाशी की 'हरिश्चन्द्राची फैक्ट्री', रितुपर्णो घोष की 'शॉब चरित्रो काल्पनिक' और प्रियदर्शन की कांचीवरम दिखाई गई। 'हरिशचन्द्राची फैक्ट्री' भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहब फाल्के की धुन और लगन का बड़ा बेहतरीन चित्रण है। परिस्थितियाँ इतनी हास्य और रोचक हैं कि दर्शक पलकें झपकाना भूल जाते हैं। फिल्म बनाने के लिए पागल, गुलाम भारत का एक आदमी फाल्के अपने घर के बर्तन-बासन बेच लंदन एक प्रोडक्शन हाउस में जा पहुँचता और जिस आत्मविश्वास के साथ कहता है कि-

तीनों छायाचित्र : आशा सिंह

आई एम फ्रॉम इंडिया, आई वांट टू मेक फिल्म, कैन यू हेल्प'। अद्‌भुत दृश्य है। यही नहीं पहली बार बीज से पौधा बनने की कहानी पर्दे पर फिल्माना और पहली भारतीय फिल्म राजा हरिशचन्द्र बनाने की जद्दोजहद जबरदस्त तरीके से फिल्माया गया है। भारत ही नहीं दुनिया में काफी कम संख्या में बचे पारसी समुदाय के लोगों की बेहद रोचक कहानी है 'लिटिल जीजो'। फिल्म के लगभग सभी कलाकार पारसी हैं। छोटी-सी भूमिका में मशहूर मॉडल अभिनेता जॉन अब्राहम भी हैं जो कि पारसी माँ और मलयाली पिता की संतान हैं। फिल्म में बमन ईरानी जैसे कलाकार उदारवादी पारसी का प्रतिनिधित्व करता है तो जहान भाटियावाला एक कट्टर धड़े का। एजाज खान की व्हाइट एलीफेंट केरल के एक छोटे से गाँव की एक लोककथा जैसी फिल्म है। फिल्म की सिनेमेटोग्राफी 'मालगुड़ी डेज' धारावाहिक की याद दिलाती है। दक्षिण भारतीय पृष्ठभूमि पर बनी यह फिल्म हिन्दी में है जिसमें नीना गुप्ता, प्रशांत और तिष्ठाता चटर्जी ने भूमिकाएँ निभाई हैं। प्रियदर्शन की फिल्म 'कांचीवरम' को समारोह की उपलब्धि कहा जा सकता है।

बुनकरों की जिंदगी के आसपास बुनी गई फिल्म हकीकत में पूरे बुनकर समाज की दिक्कतों, दो जून की रोटी जुटाने की उनकी जद्दोजहद, हक पाने का साहस देती विचारधारा के अनुकरण और तमाम प्रयासों के बाद भी मिली शिकस्त को बखूबी दिखलाती है। मुख्य किरदार एक बुनकर है तो जो जिंदगी भर दूसरों के लिए रेशम की कीमती साड़ियाँ बुनता है उसको एक रेशमी सूत तक नसीब नहीं होता। समाजवाद से प्रभावित होकर बुनकरों के हक की लड़ाई लड़ने वाला एक बुनकर पिता अपनी बेटी को रेशमी साड़ी में विदा करने की हसरत में थोड़ा-थोड़ा रेशम चुराता है। वह जानता था कि बुनकर की कमाई कभी इतनी न होगी कि वह अपनी बेटी के लिए एक भी रेशमी साड़ी खरीद सके। युवा बेटी की लाश पर जब अधबुनी साड़ी ओढ़ाता है तो साड़ी उसका कफन भी नहीं बन पाती।

(लेखिका नवदुनिया में कार्यरत हैं।)